नगर निगम आयुक्त व मेयर ठेकेदारों की मनमानी पर रोक लगाएं

करनाल। जिला कांग्रेस संयोजक त्रिलोचन सिंह ने नगर निगम आयुक्त व मेयर को पत्र लिखकर स्मार्ट सिटी की गलियों में कूड़ा उठाने में बरती जा रही लापरवाही का मुद्दा उठाया है।

पिछले कई महीनों से नगर निगम के ठेकेदार मनमानी कर रहे हैं। शहर के काफी इलाकों में कूड़ा उठाने के लिए वाहन नियमित तौर पर नहीं भेजे जा रहे। इस परेशानी से बचने के लिए लोगों ने निजी तौर पर सफाई कार्य करने वालों को अपने घरों के आसपास कूड़ा उठाने के लिए काम पर लगा लिया।

प्राइवेट रेहड़ी लेकर कूड़ा उठान करने वाले लोगों को ठेकेदारों ने पहले डंपिंग प्वाइंट दे रखे थे, लेकिन अब ठेकेदार डंपिंग प्वाइंट पर कूड़ा फेंकने की इजाजत उक्त लोगों को नहीं दे रहे। इधर निजी तौर पर काम करने वाले लोगों ने रोष स्वरूप एलान कर दिया है कि एक फरवरी से वह कूड़ा उठाने का काम नहीं करेंगे, क्योंकि कूड़ा उठाने के बाद डंपिंग के लिए उन्हें कोई स्थान उपलब्ध नहीं है।

कांग्रेस जिला संयोजक त्रिलोचन सिंह का कहना है कि नगर निगम आयुक्त व मेयर ठेकेदारों की मनमानी पर रोक लगाएं। कूड़ा उठान बंद हुआ तो स्मार्ट सिटी की गलियां कचरे के ढेरों से अट जाएंगी। स्मार्ट सिटी पर धब्बा लग जाएगा। त्रिलोचन सिंह ने सवाल उठाए कि नगर निगम ठेकेदारों को क्यों मनमानी करने की छूट दी जा रही है। क्या इसमें सत्ताधारी नेताओं की मिलीभगत है क्या नगर निगम अधिकारियों की आंखों पर पट्टी बंधी हुई है। उन्होंने कहा कि अगर जल्द समस्या का हल नहीं किया जाता तो कांग्रेस कार्यकर्ता सडक़ों पर उतरने के लिए मजबूर होंगे।

मनोहर लाल ने हरियाणा में भारत जोड़ो यात्रा के दौरान अपशब्दों का प्रयोग कर कई बार राहुल गांधी का अपमान किया

करनाल। कांग्रेस के जिला संयोजक त्रिलोचन सिंह, वरिष्ठ कांग्रेस नेता रघबीर संधु, महिला जिला प्रधान उषा तुली व युवा जिला प्रधान मनिंद्र शंटी ने कहा कि सीएम मनोहर लाल ने हरियाणा में भारत जोड़ो यात्रा के दौरान अपशब्दों का प्रयोग कर कई बार राहुल गांधी का अपमान किया है।

सीएम ने गलती स्वीकार करते हुए 26 जनवरी तक देश की जनता से माफी नहीं मांगी तो 29 जनवरी को करनाल कांग्रेस रेल रोको आंदोलन करेगी। इस दिन केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह सोनीपत के गोहाना में रैली करने आ रहे हैं। त्रिलोचन सिंह ने कहा कि कांग्रेस मोदी सरकार को चेताना चाहती है कि देश के लोकप्रिय नेता का इस तरह अपमान न किया जाए। भाजपा हाइकमान हरियाणा के मुख्यमंत्री पर अनुशासनात्मक कार्रवाई करे।

मानव सेवा संघ में पत्रकारों से बातचीत करते हुए जिला संयोजक त्रिलोचन सिंह ने भाजपा सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा से देश-प्रदेश में कांग्रेस की लहर चल पड़ी है और भाजपा की पोल खुल गई है। अपना झूठ सामने आने से भाजपा के नेता घबरा गए हैं और बौखलाहट में अनाप-शनाप बयानबाजी कर रहे हैं।

सीएम मनोहर लाल ने जिस प्रकार के अमर्यादित और अपनमानजनक शब्दों का प्रयोग राहुल गांधी के लिए किया है इससे उनकी ओछी मानसिकता सामने आ गई है। ऐसे मुख्यमंत्री को सीएम की कुर्सी पर रहने का कोई हक नहीं है, उन्हें नैतिकता के आधार कुर्सी छोड़ देनी चाहिए। इस अवसर पर कृष्ण बसताड़ा, रानी कांबोज, कोसर अली बलहेड़ा, परमजीत भारद्वाज, कर्मपाल सिंह, प्रेम मलवानिया, अशोक दुग्गल, मीनू दुआ व राजपाल तंवर आदि मौजूद रहे।

राशनकार्ड व पेंशन कटने से उग्र हुए ग्रामीणों ने भाजपा नेताओं को खदेड़ा

काछवा। जिले के गांव काछवा में बीजेपी के आदेशानुसार गांव व शहर में हर बूथ पर पन्ना प्रमुख बनाने का कार्य शुरू किया हुआ है। पन्ना प्रमुख बनाने के लिए गांव काछवा में बीजेपी कार्यकर्ताओं द्वारा गांव की कश्यप चौपाल में स्थानीय बीजेपी कार्यकर्ताओं को बुलाया गया।

भाजपा कार्यकर्ताओं की इस मीटिंग की गांव के लोगों को भनक लग गई , ओर लोग अपनी अपनी परिवार आईडी को लेकर कश्यप चौपाल में इकट्ठा होना शुरू हो गए । जिनमें ज्यादातर विधवा महिला और दिव्यांग लोग जिनके राशन कार्ड और पेंशन कट गई थी उन लोगों ने अपना रोष व्यक्त किया ।

लोगों के रोष को देखते हुए बीजेपी पदाधिकारियों द्वारा लोगों को यह आश्वासन दे कर संतुष्ट किया कि वे जल्दी ही उनकी समस्याओं को हल कराने के लिए गांव में जिला प्रशासन द्वारा कैंप लगवाने की व्यवस्था करेंगे । साथ ही कहा कि गांव में जिनके राशन कार्ड कटे हैं और 180000 से इनकम कम है उनके राशन कार्ड बनवाने का भरोसा दिया।

भाजपा कार्यकर्ता सुनील गोयल ने लोगों से अपील की सीएससी में जाकर अपनी इनकम वेरीफाई करवाएं और अपना आयुष्मान कार्ड राशन कार्ड बनवाने के लिए आगे आए और चिरायु स्कीम का लाभ उठाएं। बीजेपी कार्यकर्ताओं को लोगों में रोष देखते हुए बिना मीटिंग किए ही वापिस लौटना पड़ा।

हरियाणा शिक्षा विभाग के एसीएस ने खुद को बरी किया, स्कूल मुखियाओं को फटकारा

करनाल (म.मो.) स्कूली शिक्षा के बेहतर परिणामों के लिये मंगलसेन सभागार में 12 जनवरी को राज्य भर के स्कूलों के मुखियाओं से सीधे संवाद का आयोजन किया गया। इसमें एसीएस (अतिरिक्त मुख्य सचिव) महावीर सिंह ने स्कूल मुखियाओं से अच्छे परीक्षा परिणान न आने के कारण पूछे तथा इसके लिये उन्होंने जमकर फटकारा।

ये देश का दुर्भाग्य है कि जो अधिकारी खुद शिक्षा का बेड़ा गर्क करने के लिये जिम्मेदार हो वही उल्टे अध्यापकों से इसके कारण पूछकर उन्हें फटकार लगा रहा है। कोई पूछे महावीर सिंह से कि स्कूलों में अध्यापकों के कितने पद खाली पड़े हैं? ये बात करते हैं कि विज्ञान व गणित की जबकि स्कूलों में गणित और विज्ञान के अध्यापक ही नहीं है और न ही विज्ञान की प्रयोगशालायें; ऐसे में बच्चे इन विषयों में 80 प्रतिशत अंक कहां से लायेंगे? महावीर सिंह की छत्रछाया में पूरा शिक्षा विभाग घपले-घोटालों व लूट कमाई का अड्डा बना हुआ है। विभाग के निचले से निचले स्तर यानी खंड शिक्षा अधिकारी के कार्यालय से लेकर, पंचकुला स्थित उनके अपने कार्यालय तक अधिकारी बिना रिश्वत के काम करने को राजी नहीं।

अध्यापकगण बच्चों को पढ़ाने की बजाय अपने हर छोटे-मोटे काम के लिये इन दफ्तरों के चक्कर लगाते रहते हैं। जबकि ये तमाम काम ऐसे होते हैं जो दफ्तर में बैठे बाबुओं

अध्यापक प्रमोद एवं नंद किशोर : स्कूलों में पढ़ाने की बजाए मुख्यालय में जमे बैठे हैं

द्वारा स्वत: कर दिये जाने चाहिये। शिक्षा विभाग का उद्देश्य अब बच्चों को शिक्षित करना नहीं रह गया है बल्कि शिक्षा के नाम पर अधिक से अधिक लूट कमाई करना रह गया है।

विभाग के हर महत्वपूर्ण पद पर उसे नियुक्त किया जाता है जो बड़ी से बड़ी डकैतियां मार कर अधिक से अधिक लूट कमाई करके अपने आकाओं को दे सके। आये दिन ऐसे डकैतों द्वारा मारी गई डकैतियों के पकड़े जाने के बावजूद भी किसी के खिलाफ़ कोई कार्रवाई नहीं की जाती। इससे निर्भय एवं प्रेरित होकर अधिक से अधिक विभगीय कर्मचारी बड़ी से बड़ी डकैती मारने में जुटे रहते हैं। इसके अलावा सर्वशिक्षा अभियान का तो एक मात्र उद्देश्य ही लूट कमाई है, इसका शिक्षा से कोई लेना-देना नहीं है। सर्वविदित है कि स्कूल शिक्षकों से तमाम तरह के गैरशैक्षणिक कार्य....चुनाव सम्बन्धी, जनगणना सम्बन्धि एवं तरह-तरह के सर्वेक्षण इत्यादि करवाये जाते हैं सिर्फ बच्चे नहीं पढ़वाये जाते।

विभाग मुख्यालय में बने एकैडमिक सेल में डॉ. प्रमोद व नंद किशोर नाम के जो दो जमूरे बैठा रखे हैं उनका एकमात्र काम शिक्षा बजट को ठिकाने लगाना और पढ़ाई का सत्यानाश कराना है। प्रमोद जो डॉक्टर की डिग्री लगाये फिरता है, उससे कोई पूछे कि उसने दुनियां के कौन से विश्वविद्यालय में कौनसा शोध करके यह नकली डिग्री हासिल की है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार स्कूल मास्टर प्रमोद ने मुख्याल में अपनी शक्तियों का दुरुपयोग करके मानव रचना विश्वविद्यालय को ट्रेनिंग प्रोग्राम के नाम पर करोड़ों रुपये के भुगतान किये हैं। उसके बदले अन्य उपहारों के अलावा यह डॉक्टरी डिग्री भी उसे यहीं से मिली है।

तमाम स्कूलों में अध्यापकों व अन्य आवश्यक संसाधनों की कमी के बावजूद ये लोग बजट का दुरुपयोग टेबलॉयड, एजुसेट, जनरेटर सेट, कम्प्यूटर सेट आदि-आदि की खरीदारी पर करते हैं ताकि मोटा कमीशन खुद भी खा सकें और अपने ऊपर बैठे अधिकारियों व नेताओं को भी खिला सकें। किसी जमाने में जब इस विभाग की कमान सुरीना राजन के हाथ में आई थी तो उन्होंने इन दोनों को यहां से भगा कर स्कूलो में तैनात कर दिया था। परन्तु उनके जाते ही ये लोग फ़िर वापिस यहीं आ जमे।

गदपुरी टोल पर फिर धरने-प्रदर्शन की तैयारी

पलवल (म.मो.) करीब छ: माह बाद, प्रदर्शनकारियों को फ़िर से गदपुरी टोल प्लाजा की याद आ गई। इसमें कोई दो राय नहीं कि यह टोल प्लाजा पूरी तरह से अवैध एवं गैरकानूनी है। सरकार के अपने बनाये हुए नियमों के अनुसार एक टोल से दूसरे टोल के बीच जो फासला होना चाहिये, उसका यहां पालन नहीं हो रहा। टोल नियमों के अनुसार वसूली तभी हो सकती है जब काम पूरा हो जाय। लेकिन इस मामले में तो दोनों ही नियमों की अवहेलना करते हुए खुली लूट हो रही है। दुर्भाग्य तो यह है कि एक गैर कानूनी लूट रुकवा पाने में यहां के तमाम नेता बेकार साबित हो रहे हैं। ये नेतागण धमकी तो बहुत बड़ी-बड़ी देते हैं परन्तु कुछ कर पाने की शक्ति इनमें नजर नहीं आती। एक तरफ़ तो ये लोग टोल प्लाजा का ही विरोध करने का नाटक करते हैं तो दूसरी ओर टोल के बदले कुछ रियायतों की मांग पर सौदेबाजी करते हैं। जब एक चीज अवैध एवं गैरकानूनी है तो उस पर किसी प्रकार की सौदेबाजी का क्या मतलब?

अब जो धरने की बात की जा रही है उसके पीछे निकट के स्कूली बच्चों के लिये एक फुटओवरब्रिज तथा वर्ग विशेष के लोगों के लिये मुफ्त पास की व्यवस्था की मांग है। यानी कि इस तरह की दो-चार मांगे यदि टोल कंपनी मान लेती है तो इन नेताओं को अवैध एवं गैर कानूनी टोल से कोई दिक्कत नहीं। ऐसे कमजोर एवं जनाधार विहीन नेताओं की भला क्यों परवाह करने लगी टोल कम्पनी?

कम्पनी को पूरा सरकारी संरक्षण प्राप्त होने के नाते यदि वह कोई भी मांग न माने तो भी, उसे विश्वास है कि उसकी लूट को कोई खतरा नहीं। हां, यदि क्षेत्र की जनता सीधे तौर पर संघर्ष करने पर आमादा हो जाये और टोल को उखाड़ फेंके तो फ़िर न किसी कम्पनी और न ही सरकार की कोई हिम्मत है जो इस तरह की अवैध वसूली कर सके।

सूरजकुंड रोड निर्माण का एक माह पूर्व खट्टर ने और अब सीमा त्रिखा ने किया उद्घाटन

फ़रीदाबाद (म.मो.) गत माह मुख्यमंत्री खट्टर द्वारा थोक के भाव किये गये उद्घाटनों में से एक सूरजकुंड रोड का भी था। इसी रोड का उद्घाटन 16 जनवरी को स्थानीय विधायक सीमा त्रिखा ने भी कर डाला। अपनी झेंप उतारने के लिये उन्होंने नारियल फोड़ने का काम किसी नागरिक से कराने के बाद लड्डू भी बांटे। अनखीर गोल चक्कर से लेकर सूरजकुंड गोल चक्कर तक साढ़े आठ किलो मीटर लम्बी सड़क को बनाने के नाम पर 21.38 करोड़ रुपये डकारने की योजना है। गजब की बात तो यह है कि यह 'प्रोजेक्ट' 9 माह में पूरा होगा।

इससे भी बड़े गजब की बात तो यह है कि इस सड़क का निर्माण मात्र नौ साल पूर्व हुआ था। सूरजकुंड मेले से पहले इस सड़क की स्पेशल रिपयेर पर हर वर्ष करोड़ों रूपए खर्च किये जाते है।

साथ में 10-15 करोड़ का जो पत्थर ठेकेदार ने बेच खाया वो अलग से और सड़क के दोनों तरफ बरसाती पानी की जो नालियां बननी थी वो आज तक अधर में लटकी हुई

करने को कुछ नहीं तो उद्घाटन ही सही

है। एक और मजेदार बात तो यह भी है कि जिस जेपी कम्पनी ने इसे 9 वर्ष पूर्व बनाया था वही कम्पनी अब फ़िर इसे दोबारा से बनाने जा रही है। समझने वाली बात तो यह है कि यह सारी सड़क किसी कच्ची, रेतीली अथवा दलदली ज़मीन पर न होकर मजबूत पहाड़ी धरातल पर बनाई गई है। इसलिये इस सड़क पर फिर से कोई नया आधार बनाने की आवश्यकता नहीं है, केवल कारपेटिंग की ही आवश्यकता होती है। परन्तु यह सब तो तब होता है जब सड़क बनवाने वालों की नीयत साफ हो। जब सड़क बनाने का उद्देश्य ही लूट कमाई करने का हो तो इसी तरह के धंधे होते हैं। कोई पूछने वाला नहीं है कि मात्र साढ़े आठ किलो मीटर की चार लेन सड़क बनाने पर नौ महीने का समय व इतनी लागत? चलो यह तो शुक्र है कि मात्र 21.38 करोड़ का ही खर्चा घोषित किया गया है, यदि इसकी जगह 40 करोड़ भी बता दें तो कौन पूछने वाला है।